



# आपदा समाचार



उत्तर प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (UP SDMA)

VOLUME - II

AUG 2025

## बाढ़ आपदा सुरक्षा संवाद

सजग प्रदेश,  
सुरक्षित नागरिक

FLOOD



बाढ़



## लेफ्टिनेंट जनरल योगेंद्र डिमरी

पी.वी.एस.एम., ए.वी.एस.एम., वी.एस.एम., (से.नि.)

### Lt Gen Yogendra Dimri

PVSM, AVSM, VSM (Retd)

### उपाध्यक्ष/Vice Chairperson

## उ.प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण U.P. State Disaster Management Authority

बी-1 ब्लॉक, प्रथम तल, पिकप भवन, विभूति खण्ड,  
गोमती नगर, लखनऊ-226010

B-1 Block, First Floor, PICUP Bhawan, Vibhuti Khand,  
Gomtinagar, Lucknow-226010

## संदेश

प्रिय पाठकों,

उ.प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की पत्रिका "आपदा समाचार" के माध्यम से आप सभी से संवाद करना मेरे लिए गर्व का विषय है। यूपीएसडीएमए में अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए हमारा सतत प्रयास है कि प्रदेश को आपदा न्यूनीकरण, तैयारी एवं क्षमता निर्माण के क्षेत्र में अधिक सशक्त और संवेदनशील बनाया जाए।

वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन के कारण वर्षा के पैटर्न, तापमान और मौसमी घटनाओं में तीव्र परिवर्तन देखा जा रहा है। इन परिवर्तनों का सीधा प्रभाव बाढ़, भूस्खलन, बिजली गिरना, और जलजनित बीमारियों जैसी आपदाओं की आवृत्ति और तीव्रता पर पड़ रहा है। विशेष रूप से बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में यह एक गंभीर चुनौती के रूप में सामने आई है।

इस संस्करण के माध्यम से हमारा उद्देश्य आम नागरिकों में बाढ़ से पूर्व तैयारी, त्वरित प्रतिक्रिया, और जलवायु परिवर्तन के अनुकूलन उपायों के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। साथ ही, यह अंक हमारे आपदा प्रबंधन विशेषज्ञों, फील्ड अधिकारियों, तकनीकी संस्थानों और समुदायों के अनुभवों एवं प्रयासों को साझा करने का माध्यम भी बनेगा।

### यू.पी.एस.डी.एम.ए. सभी नागरिकों से अपेक्षा करता है कि :

- \* मौसम पूर्वानुमान और चेतावनियों पर वे ध्यान दें,
- \* आपसी सहयोग और जागरूकता से बाढ़ जोखिम को कम करें।

हम सबका सामूहिक प्रयास ही सुरक्षित, उत्तर प्रदेश के निर्माण की दिशा में सबसे बड़ी ताकत है।

सादर,

उपाध्यक्ष

उत्तर प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

#### Editor

Dr. Kaneez Fatima  
Project Director (Drought), UP SDMA

#### Technical Support

Mr. Prashant Kumar  
Project Associate, UP SDMA

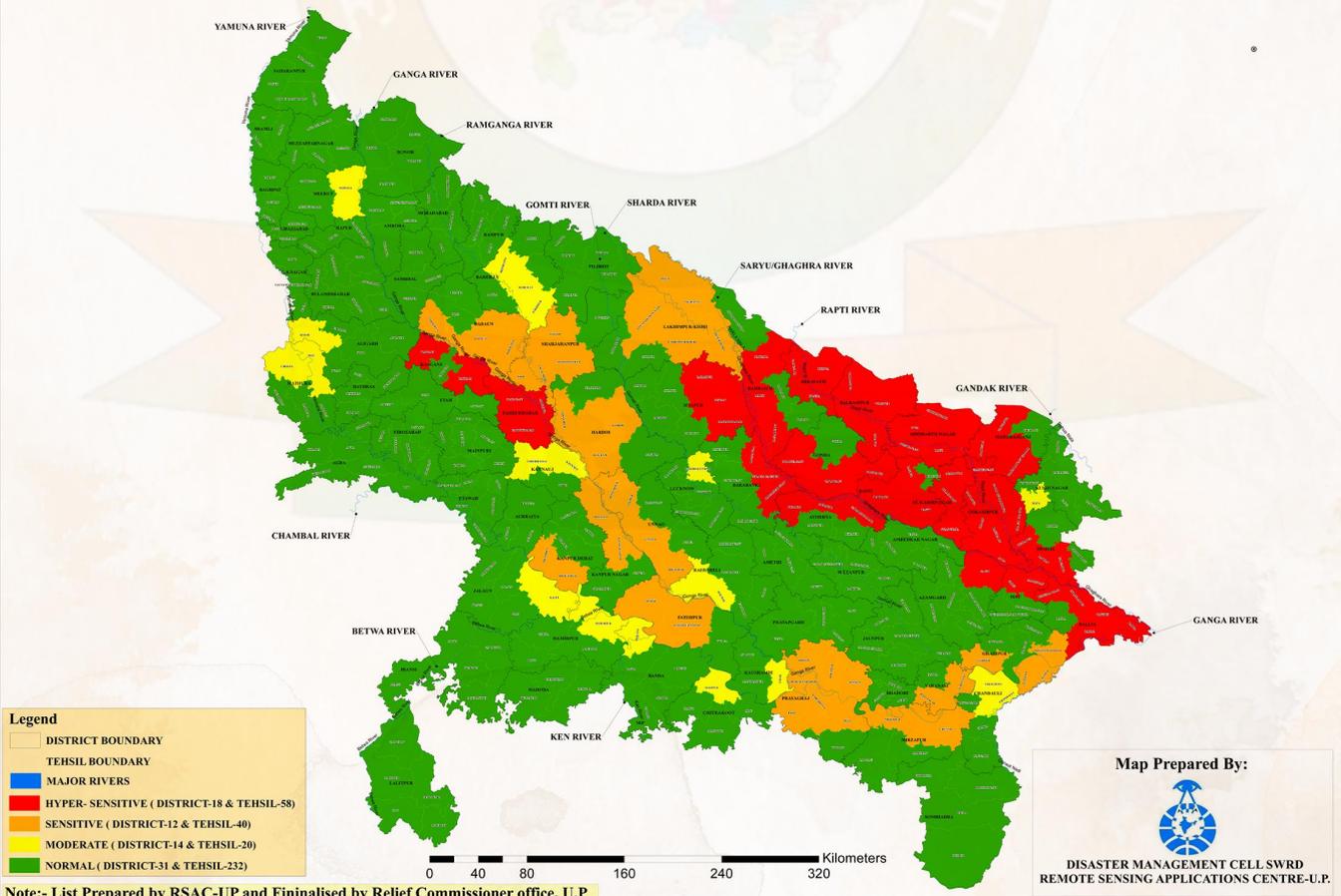
बाढ़ न्यूनीकरण हेतु विभागों द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्य

FLOOD HAZARD ZONATION IN UTTAR PRADESH

श्री एस. के. एस. यादव, वैज्ञानिक-एस.ई.,  
 श्री प्रमोद कुमार, प्रोजेक्ट वैज्ञानिक,  
 रिमोट सेंसिंग एप्लीकेशन्स सेंटर, उत्तर प्रदेश

Flooding is a recurring issue in Uttar Pradesh, particularly during the monsoon season. Districts located near rivers are especially vulnerable to flood risks. The impact of such floods can be significantly mitigated through the use of Geographic Information System (GIS) and remote sensing technologies. These tools support flood hazard assessment and mapping, which help identify areas at risk and enhance flood risk management and disaster preparedness. Flood hazard maps typically depict the anticipated extent and depth of flooding under various scenarios. Rivers such as the Ganga, Yamuna, Ramganga, Rohni, Gandak, Ghaghra, Sharda and Rapti play a major role in creating flood-prone zones in the state, which are categorized as hyper-sensitive, sensitive, or moderately sensitive. Based on a study of flood hazard zonation in Uttar Pradesh over the past sixteen years (2009 to 2024), a total of 58 tehsils across 18 districts have been classified as Hyper-sensitive to flooding. Additionally, 40 tehsils in 12 districts have been identified as Sensitive, while 20 tehsils in 14 districts fall under the Moderate flood risk category.

MAP SHOWING FLOOD AFFECTED TEHSIL IN DIFFERENT DISTRICTS OF UTTAR PRADESH



Map Showing Hyper-sensitive, Sensitive, Moderate and Normal Districts of Uttar Pradesh

## तटबंध प्रबंधन एडवाइजरी

बाढ़ प्रबंधन सूचना प्रणाली केंद्र,  
सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग उ०प्र,

उत्तर प्रदेश में मुख्य रूप से 8 नदी बेसिन एवं इनकी सहायक नदिया हैं | 08 प्रमुख नदी बेसिन में गंगा बेसिन, गंडक बेसिन, घाघरा बेसिन, राप्ती बेसिन, गोमती बेसिन, रामगंगा बेसिन, सोन बेसिन एवं यमुना बेसिन हैं |

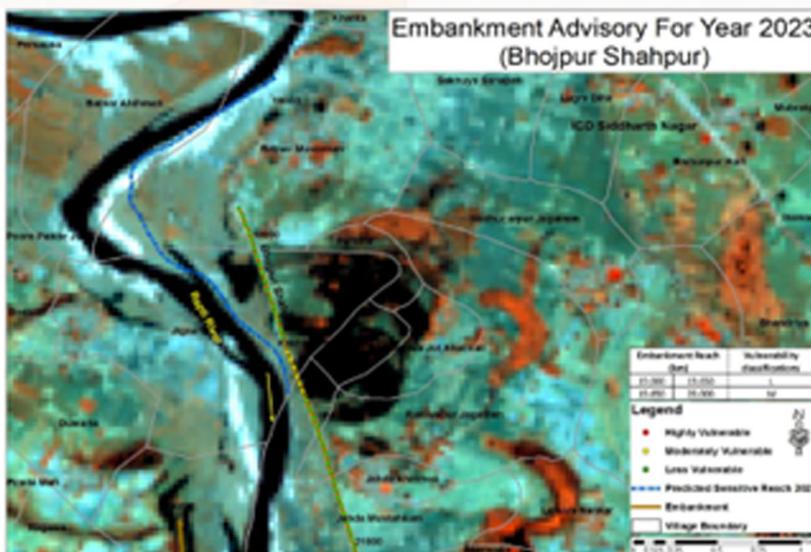
राप्ती नदी नेपाल से होते हुए भारत में उत्तर प्रदेश राज्य में प्रवेश करती है। यह नदी नेपाल को पार करके उत्तर प्रदेश के श्रावस्ती जिले में प्रवेश करती है। इसके बाद, यह नदी उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों से होकर गुजरती है, जिनमें, बलरामपुर, सिद्धार्थनगर, महाराजगंज, संत कबीर नगर, गोरखपुर एवं देवरिया शामिल हैं। बाढ़ की दृष्टि से राप्ती नदी संवेदनशील है | नेपाल राष्ट्र में हुई वर्षा एवं स्थानीय वर्षा तथा नदी के बहाव के साथ आने वाले Sediment Load बाढ़ को भयावह बना देते हैं |

बाढ़ की विभीषका से बचाव हेतु नदियों के प्रवाह के समानांतर तटबंधों का निर्माण, सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा किया गया है जिससे आम जनमानस एवं उनकी परिसम्पत्तियों को बाढ़ से बचाया जा सके | उतर प्रदेश में नदियों पर 3,813.967 किमी के तटबंध बने हुए हैं, जो लगभग 16,11,859.82 हेक्टेयर क्षेत्र को सुरक्षा प्रदान कर रहे हैं |

राप्ती नदी बेसिन में लगभग 1100.00 किलोमीटर लंबाई में बने हुए तटबंधों की सुरक्षा के लिए सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग, उत्तर प्रदेश के अंतर्गत बाढ़ प्रबंधन सूचना प्रणाली केंद्र (FMISC, Lucknow), UPIWRD द्वारा Embankment Asset Management System “EAMS” (तटबंध परिसंपत्ति प्रबंधन प्रणाली “ईएएमएस”) विकसित किया है जिससे राप्ती नदी बेसिन के अंतर्गत 05 जनपद गोरखपुर, सिद्धार्थनगर, देवरिया, संत कबीरनगर एवं महाराजगंज में निर्मित तटबंधों की सुरक्षा सुनिश्चित की जाती है |

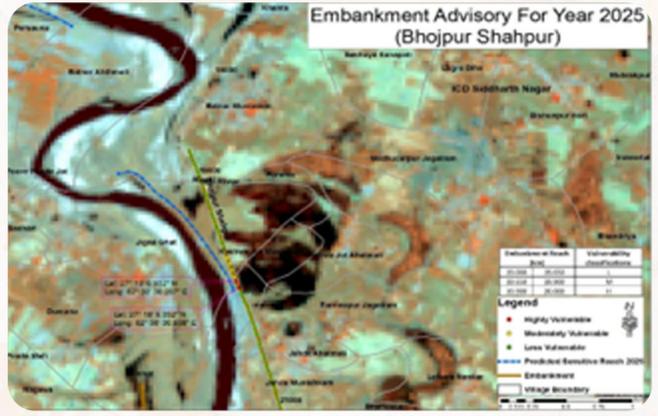
Embankment Asset Management System “EAMS के अंतर्गत प्रतिवर्ष राप्ती नदी बेसिन पर बने हुए तटबंधों के लिए Embankment Advisory निर्गत की जाती है। Embankment Advisory, राप्ती नदी की जलधारा के Prediction के आधार पर मानसून काल से पूर्व निर्गत कर दी जाती है जिससे सम्बंधित कार्यालय तटबंधों की सुरक्षा हेतु आवश्यक कार्यवाही कर सकें |

Embankment Advisory की कार्यशैली को जानने के लिए जनपद सिद्धार्थनगर में निर्मित तटबंध भोजपुर शाहपुर का अवलोकन कर सकते हैं:-



वर्ष 2023 एवं वर्ष 2024 हेतु निर्गत Embankment Advisory में हम देख सकते हैं कि तटबंध, **Moderate Vulnerable** की श्रेणी में है जिसको की पीले रंग से चिन्हांकित किया गया है एवं नदी की Predicted धारा की दिशा को नीले रंग से प्रदर्शित किया गया है जो कि तटबंध की ओर जा रही है |

वर्ष 2025 हेतु निर्गत Embankment Advisory, तटबंध का कुछ हिस्सा **Highly Vulnerable** की श्रेणी में चिन्हांकित हुआ है जिसको कि लाल रंग से प्रदर्शित किया गया है |



तटबंध के **Highly Vulnerable** की श्रेणी में आने पर उस तटबंध के दोनों छोर के निर्देशांक भी निर्गत किये जाते हैं जिससे सम्बंधित कार्यालय आवश्यक कार्यवाही समयान्तर्गत करते हुए तटबंध की सुरक्षा सुनिश्चित कर सके |

नोट- आम-जनमानस भी बाढ़ प्रबंधन सूचना प्रणाली केंद्र पोर्टल से बाढ़ से संबंधित अलर्ट्स/एडवाइजरी प्राप्त कर सकते है |

वेबसाइट लिंक- <https://fmisc.up.gov.in/>

Flood Management Information System Centre



सिवाई एवं जल संरक्षण विभाग  
उत्तर प्रदेश सरकार

## Flood Management Information System Centre

### बाढ़ प्रबंधन सूचना प्रणाली केंद्र



Irrigation & Water Resources D  
Lucknow, Uttar Pradesh

Home
About Us
Portals
Maps
Event & Activities
Eams Advisory Flip
Flood Book
Achievement
Feedback
Contact Us

Alerts
crossed the danger level of 127.700 mtr. today on 15-09-2025.



**Daily Rainfall**  
Bulletin

Daily Rainfall Bulletin



**Water Danger Level**

Rivers Near & Above Danger Levels



**HYDROMETEOROLOGICAL STATUS**

Hydro-meteorological Status



**INUNDATION MAPS**



**Daily Flood Bulletin**



**EMBANKMENT ADVISORY**

Embankment Advisory



River Basins in Uttar Pradesh  
Irrigation & Water Resource Department  
Uttar Pradesh

**RAPTI RIVER FLOOD FORECASTING SYSTEM**  
Irrigation Department, Uttar Pradesh

Date 17/11/2025

A web-based application has been developed with an interface to allow users to view the forecasted Water Level(m) results under Rapti Flood Forecast System

## उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड राज्य में केंद्रीय जल आयोग (CWC) द्वारा एकीकृत बाढ़ प्रबंधन

केंद्रीय जल आयोग, लखनऊ

केंद्रीय जल आयोग (CWC) भारत में जल संसाधनों के क्षेत्र में अग्रणी तकनीकी संगठन है। यह जल शक्ति मंत्रालय, जल संसाधन विभाग, नदी विकास और गंगा संरक्षण के अधीन कार्य करता है और बाढ़ नियंत्रण, सिंचाई, जल आपूर्ति, नौवहन और जलविद्युत विकास से संबंधित योजनाओं की योजना, समन्वय और क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। केन्द्रीय जल आयोग में तीन विशिष्ट विंग हैं - डिजाइन एवं अनुसंधान (D&R), नदी प्रबंधन (RM) और जल योजना एवं परियोजनाएं (WP&P)।

CWC की सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों में से एक है बाढ़ पूर्वानुमान और प्रबंधन, विशेष रूप से उत्तर प्रदेश (UP) और उत्तराखंड (UT) जैसे बाढ़-प्रवण राज्यों में। केंद्रीय जल आयोग की 14 क्षेत्रीय इकाइयों में से एक, अपर गंगा बेसिन संगठन (UGBO), वर्ष 1995 में स्थापित हुआ था। यह संगठन RM विंग के अंतर्गत कार्य करता है और गंगा (दलमऊ तक), शारदा, राप्ती, गोमती और घाघरा जैसी प्रमुख नदियों में वास्तविक समय में जल विज्ञान डेटा संग्रहण, बाढ़ पूर्वानुमान, जल गुणवत्ता निगरानी और परियोजना मूल्यांकन गतिविधियाँ संचालित करता है।

CWC देशभर में 20 नदी बेसिनों में फैले एक व्यापक हाइड्रो-मीटेरोलॉजिकल ऑब्जर्वेशन (HO) नेटवर्क का संचालन करता है। अकेले उत्तर प्रदेश में, UGBO, LGBO (पटना) और YBO (नई दिल्ली) द्वारा प्रबंधित 182 HO स्टेशन हैं। देशभर में कुल 331 स्टेशनों पर बाढ़ पूर्वानुमान जारी किए जाते हैं, जिनमें से 44 स्टेशन उत्तर प्रदेश में हैं। वर्ष 2024 में, CWC ने 95% पूर्वानुमान सटीकता के साथ जारी किए।

CWC के प्रत्येक डिविजन कार्यालय, जैसे लखनऊ स्थित मिडिल गंगा डिवीजन-I, मानसून अवधि के दौरान 24x7 बाढ़ नियंत्रण कक्ष संचालित करते हैं जहां सभी स्थलों के जलस्तर प्रति घंटा एकत्र किए जाते हैं एवं चेतावनी स्तर से पर करने पर बाढ़ पूर्वानुमान स्थलों पर चेतावनी एवं पूर्वानुमान जारी किए जाते हैं।

CWC का केंद्रीय बाढ़ नियंत्रण कक्ष, नई दिल्ली में स्थित है, जो देशव्यापी गतिविधियों का समन्वय करता है और 36 डिविजनल बाढ़ नियंत्रण कक्षों से डेटा प्राप्त कर NDMA, MHA और अन्य एजेंसियों को भेजता है। बाढ़ से संबंधित जानकारी सोशल मीडिया और पोर्टल्स पर भी नियमित रूप से साझा की जाती है।

River Gauge On River Ganga



Discharge measurement using ADCP



Satellite based Telemetry Station



## UP SDMA की गतिविधियां

### राष्ट्र स्तरीय नागरिक-सैन्य संगोष्ठी का आयोजन

भारतीय सेना की मध्य कमान एवं उत्तर प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (UP SDMA) द्वारा, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (NDMA) के सहयोग से 10 जून 2025 को लखनऊ में राष्ट्र स्तरीय नागरिक-सैन्य संगोष्ठी का सफल आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी का उद्देश्य केंद्रीय एवं राज्य स्तरीय आपदा प्रबंधन एजेंसियों, पूर्वानुमान संस्थानों और प्रतिक्रिया बलों को एक मंच पर लाकर बाढ़ एवं संबंधित आपदाओं के प्रबंधन में बेहतर समन्वय और सहयोग को बढ़ावा देना था।



कार्यक्रम में NDMA, विभिन्न राज्यों के SDMA, IMD, CWC, NRSC, सेना, वायु सेना, NDRF, SDRF, फायर सर्विस तथा अन्य एजेंसियों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश ने अपने-अपने राज्यों में बाढ़ प्रबंधन के सफल अनुभव साझा किए तथा आपदा प्रबंधन की चुनौतियों, नवीन तकनीकों, सीख और इंसिडेंट रिस्पॉन्स सिस्टम पर विस्तृत चर्चा किया।



### राज्य स्तरीय मॉक एक्सरसाइज – जुलाई 2025



उत्तर प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (UP SDMA) द्वारा दिनांक 26 जून 2025 को प्रथम बार प्रदेश के 44 बाढ़ प्रभावित जनपदों के 118 तहसीलों में बाढ़ आपदा पर एक साथ माक एक्सरसाइज किया गया। यह अभ्यास राज्य की आपदा प्रतिक्रिया व्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में एक अहम कदम है, जिससे वास्तविक आपातकाल में जनहानि को न्यूनतम किया जा सके।

बाढ़ मॉक एक्सरसाइज का मुख्य उद्देश्य वास्तविक आपदा से पहले तैयारी की जाँच करना और सभी विभागों के बीच समन्वय को मजबूत बनाना है। इस अभ्यास से यह समझने में सहायता मिलती है कि राहत, बचाव और पुनर्वास कार्यों के दौरान कौन-सा विभाग, किस समय और किस प्रकार कार्य करेगा। इससे संसाधनों, जनशक्ति, संचार व्यवस्था तथा प्रतिक्रिया क्षमताओं में मौजूद कमियों की पहचान कर उन्हें दूर किया जा सकता है। इसके परिणामस्वरूप आपदा के समय जनहानि और संपत्ति की हानि को न्यूनतम किया जा सकता है तथा जनता में जागरूकता और आत्मविश्वास दोनों बढ़ते हैं।

ARTICLE

डूबने की घटनाएँ: गंभीर आपदा और न्यूनीकरण के उपाय



श्री मानवेंद्र प्रताप सिंह  
प्रोजेक्ट एक्सपर्ट, (सीस्मोलॉजी)

उत्तर प्रदेश में डूबने की घटनाएँ लगातार हो रही हैं। प्रदेश सरकार द्वारा वर्ष 2021 में डूबने को आपदा भी घोषित किया गया है। वर्ष 2021-24 में आपदा संबंधित जनहानि में सबसे अधिक मृत्यु विभिन्न जल स्रोतों प्रमुखतः नदियों और तालाबों में डूबने के कारण हुई है जोकि न सिर्फ चिंताजनक हैं, बल्कि प्रशासन और समाज दोनों के लिए चेतावनी भी हैं।

वर्ष 2021-24 में आपदा से हुई जनहानि के आंकड़ों के अनुसार सबसे अधिक प्रभावित आयु वर्ग 11 से 20 वर्ष के किशोर और 21 से 30 वर्ष के युवा है। इस आयु वर्ग के किशोर और युवा प्रमुखतः अत्यधिक गर्मी एवं मॉनसून के दौरान राज्य सरकार एवं मौसम विभाग द्वारा जारी की गई चेतावनी को नजरअंदाज करते हुए नदियों, तालाबों एवं झरनों में नहाने, जलस्रोतों के समीप सेल्फी लेने एवं सोशल मीडिया रील्स बनाने जाते है और डूबने का शिकार बनते है जोकि मुख्यतः दोपहर 12 बजे से शाम 5 बजे के मध्य होती है। यह भी पाया गया है कि अधिकतर घटनाएँ जनपद सोनभद्र, बहराइच, प्रयागराज, लखीमपुर खीरी, गोरखपुर एवं गाजीपुर में हुई है।

डूबने से बचाव हेतु उपाय :

- स्थायी रेस्क्यू इंफ्रास्ट्रक्चर: संवेदनशील क्षेत्रों में चेतावनी साइनेज, रेस्क्यू बोट, लाइफ जैकेट्स और वॉलंटियर प्रशिक्षित कर्मी उपलब्ध हो।
- स्थानीय निगरानी दल: हर जल निकाय के पास वॉलंटियर्स या ग्राम प्रहरी तैनात किए जाएं जो लोगों को सतर्क करें।
- विद्यालयों में जागरूकता कार्यक्रम: बच्चों और किशोरों को जल सुरक्षा, खतरे और प्राथमिक उपचार की जानकारी दी जाए।
- डिजिटल माध्यम से जागरूकता: सोशल मीडिया, लोक गीत, रेडियो और लाउडस्पीकर के माध्यम से जनपद एवं ग्राम स्तर पर अभियान चलाए जाये।
- सुरक्षित घाटों का निर्माण: सार्वजनिक या धार्मिक स्थानों पर सुरक्षित और चिन्हित स्नान घाट बनाए जाये।

डूबना कोई प्राकृतिक आपदा नहीं, बल्कि लापरवाही का नतीजा है। सही समय पर उचित कदम उठाकर इन घटनाओं को कम किया जा सकता है और अनमोल जीवन की रक्षा की जा सकती है।

"जल में आनंद तभी सार्थक होता है, जब सतर्कता उसकी साथी होती है।"



## DDMA की गतिविधियां

### जनपद नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट जेवर हेतु पर्यावरण प्रबंधन की कार्यवाही

श्री मनीष कुमार वर्मा (आई.ए.एस.), जिलाधिकारी  
श्री अतुल कुमार (पी.सी.एस.), अपर जिलाधिकारी (वित्त/राजस्व)  
श्री ओंकार चतुर्वेदी, आपदा विशेषज्ञ

नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट, जेवर के लिए गठित एयरपोर्ट एनवायरनमेंट मैनेजमेंट कमिटी (AEMC) ने हवाई अड्डे के 10 किलोमीटर के दायरे में पर्यावरणीय परिस्थितियों और विमान संचालन से जुड़े संभावित खतरों से बचाव हेतु कार्यवाही की गयी। हवाई अड्डे के आसपास पक्षियों और जानवरों की उपस्थिति विमान सुरक्षा के लिए एक गंभीर चुनौती बन सकती है, जिसे नियंत्रित करने के लिए एनओसी रहित निर्माणों की पहचान कर कार्रवाई करने, भवन निर्माण को विनियमित करने, स्थानीय प्रशासन के साथ मिलकर सर्वेक्षण शुरू करने तथा बाधा नियंत्रण समिति (Obstacle Control Committee) गठितकर कार्य करने की आवश्यकता है।



**सुझाव:** हवाई अड्डे के 10 किलोमीटर के दायरे में आने वाले सभी क्षेत्रों में साफ-सफाई बनाए रखी जाए, मृत पशु अथवा कूड़ा-कचरा न फेंका जाए और न जमा होने दिया जाए, ताकि पक्षी या जानवर आकर्षित न हों और विमान संचालन में कोई बाधा न उत्पन्न हो।



**कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (CSR)** के तहत एयरपोर्ट पर्यावरण की रक्षा के लिए कई प्रभावी कदम उठा सकते हैं—जैसे प्रदूषण कम करना, सौर ऊर्जा उपयोग, कचरा प्रबंधन, जल संरक्षण, हरियाली बढ़ाना और समुदाय को जागरूक करना। इससे न केवल पर्यावरण सुरक्षित रहता है, बल्कि एयरपोर्ट संचालन भी अधिक टिकाऊ और सुरक्षित होता है।

## जनपद गोंडा बाढ़ न्यूनीकरण हेतु कार्यवाही

नेहा शर्मा (आई.ए.एस.), जिलाधिकारी  
श्री अलोक कुमार (पी.सी.एस.), अपर जिलाधिकारी(वित्त/राजस्व)  
श्री राजेश श्रीवास्तव, आपदा विशेषज्ञ

जनपद गोण्डा में “बाढ़ से सुरक्षा” विषय पर जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा श्री कीर्तिवर्धन सिंह, माननीय केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन तथा विदेश राज्यमंत्री, भारत सरकार की अध्यक्षता में बैठक किया गया। प्राधिकरण द्वारा “बाढ़ राहत एवं बचाव प्रदर्शनी/फोटो गैलरी” के माध्यम से माननीय जनप्रतिनिधियों को जिला प्रशासन द्वारा की जा रही बाढ़ न्यूनीकरण, राहत एवं बचाव की तैयारियों के बारे में भी बताया गया।



मा0 मंत्री जी तथा अन्य जनप्रतिनिधिगण बाढ़ राहत व बचाव फोटो गैलरी व प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए।



जनपद गोण्डा में तहसील तरबगंज के अंतर्गत सरयू नदी के तटीय क्षेत्र में स्थित ग्राम सोनौली मोहम्मदपुर में मगरमच्छ एवं घड़ियाल बाहुल्य होने के कारण सरयू नदी में हो रही घटनाओं को न्यून करने हेतु जिलाधिकारी महोदया के निर्देश पर जोखिम स्थल को चिन्हित करके वहाँ पर चेतावनी बोर्ड की स्थापना की गयी है, जिससे ग्रामवासियों को जागरूक किया जा सके। जनसमुदाय को किसी भी आकस्मिक दुर्घटना से बचाव हेतु जागरूकता के लिए बैनर लगवाया गया है, जिससे जनसमुदाय को सुरक्षित व सतर्क रहने हेतु सूचना दी जा सके।

## जनपद सिद्धार्थनगर के आपदा मित्र की जीवन रक्षक कार्यवाही

डॉ राजा गणपति आर (आई.ए.एस.), जिलाधिकारी  
श्री गौरव श्रीवास्तव(पी.सी.एस.), अपर जिलाधिकारी(वित्त/राजस्व)  
पुष्पांजलि सिंह, आपदा विशेषज्ञ

मानवता और साहस का अद्भुत उदाहरण पेश करते हुए आपदा मित्र सुनील कुमार यादव ने राप्ती नदी में डूबते हुए एक व्यक्ति की जान बचाकर पूरे जिले का नाम रोशन किया। उनके इस साहसिक कार्य के लिए उन्हें जिलाधिकारी महोदय द्वारा कलेक्ट्रेट सभागार में सम्मानित किया गया।

राप्ती नदी में एक व्यक्ति के डूबने की सूचना मिलते ही आपदा मित्र सुनील कुमार यादव, जो उस समय अपने खेत में पशुओं के लिए चारा काट रहे थे, ने बिना देर किए अपनी लाइफ जैकेट लेकर नदी की ओर दौड़ लगा दी। घटनास्थल पर पहुँचने पर उन्होंने देखा कि व्यक्ति नदी के तेज बहाव में संघर्ष कर रहा है। बिना अपनी जान की परवाह किए सुनील कुमार यादव ने लगभग 20 से 25 फीट ऊँचे पुल से छलांग लगाई और कई प्रयासों के बाद व्यक्ति को सुरक्षित बाहर निकाल लिया। आपदा मित्र के सराहनीय एवं साहसिक कार्य के लिए जिलाधिकारी महोदय ने सम्मान पत्र और प्रशस्ति चिन्ह देकर सम्मानित भी किया।

### निष्कर्ष

आपदा मित्र स्थानीय स्तर पर प्रशिक्षित होते हैं, इसलिए घटना स्थल पर सबसे पहले पहुँचकर राहत और बचाव कार्य शुरू कर सकते हैं। इससे जनहानि और क्षति कम होती है।

### आपदा मित्र ने राप्ती नदी में छलांग लगाकर डूबते युवक की बचाई जान

स्वतंत्र चेतना, बुमरियागंज सिद्धार्थनगर। तहसील क्षेत्र के बनगाई नानकार निवासी आपदा मित्र सुनील कुमार यादव ने बहादुरी का परिचय देते हुए राप्ती नदी में डूब रहे युवक की जान बचाई। जानकारी के अनुसार, नदी में डूब रहे बहादुरपुर गांव के धिनोद मोर्या को बचाने के लिए सुनील कुमार ने रस्सी और लाइफ जैकेट की मदद से 20x25 फीट ऊँचे पुल से छलांग लगाई। कई प्रयासों के बाद युवक को सुरक्षित बाहर निकालकर उसकी जान बचाई। घटना के समय बड़ी संख्या में लोग मौके पर मौजूद थे, लेकिन किसी ने हिम्मत नहीं जुटाई। वही सुनील कुमार ने बिना मानदेय के अपना कर्तव्य निभाते हुए एक जिंदगी को बचाया। इस साहसिक कार्य के लिए ग्रामीणों, जनप्रतिनिधियों और आपदा प्रबंधन विशेषज्ञों ने सुनील कुमार को बधाई दी। वही तहसीलदार रवि कुमार यादव और आपदा विशेषज्ञ पुष्पांजलि सिंह ने भी फोन कर उनकी सराहना की।



आपदा मित्र जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (DDMA) के लिए “स्थानीय आधारभूत टीम” की तरह काम करते हैं। इनके सहयोग से DDMA आपदा न्यूनीकरण के लिए कई कार्य ले सकते हैं जैसे-

- त्वरित प्रतिक्रिया
- समुदाय जागरूकता
- स्थानीय लोगों को सूचना/मौसम जानकारी की अलर्ट का प्रेषण
- आपदा प्रबंधन प्राधिकरण एवं स्थानीय समुदाय में बेहतर समन्वय का कार्य

आपदा मित्रों के सहयोग एवं समन्वय से जिला स्तर पर आपदा प्रबंधन मजबूत और प्रभावी बन सकता है।

## जनपद लखीमपुर-खीरी बाढ़ प्रबंधन हेतु तहसील पलिया में शारदा नदी पर चैनलाइजेशन का कार्य

श्रीमती दुर्गा शक्ति नागपाल (आई.ए.एस.), जिलाधिकारी  
श्री नरेंद्र बहादुर सिंह (पी०सी०एस), अपर जिलाधिकारी (वित्त/राजस्व)  
श्री अजय कुमार, अधिशासी अभियंता, बाढ़ खंड शारदा नगर  
श्री अंकित राज, आपदा विशेषज्ञ

### शारदा नदी की भौगोलिक स्थिति

शारदा नदी समुद्र तल से लगभग 5250 मीटर की ऊँचाई के हिमालय क्षेत्र के 30028' उत्तरी अक्षांश एवं 80035' पूर्वी देशान्तर के पास से निकलकर उत्तराखण्ड प्रदेश के जनपद चम्पावत से मैदानी क्षेत्र में प्रवेश करती है। इसके उपरान्त बनबसा बैराज से होती हुई जनपद पीलीभीत में लम्बाई लगभग 40 किमी० में प्रवाहित होकर सम्पूर्णनगर से जनपद लखीमपुर-खीरी की सीमा में प्रवेश करती है। जनपद लखीमपुर-खीरी में 160 किमी० एवं जनपद सीतापुर में 9 किमी० की लम्बाई में प्रवाहित होकर जनपद सीतापुर की तहसील बिसवां के ग्राम मल्लापुर में दाहिनी ओर से घाघरा नदी में मिल जाती है। भीरा-पलिया मार्ग नेशनल हाईवे पर बने शारदा नदी पुल के पास खतरे का निशान 154.590 मीटर है।

### पलिया पुल के पास की समस्या

पलिया पुल से प्रत्येक वर्ष बाढ़ के समय शारदा नदी में औसतन 3 लाख क्यूसेक पानी प्रवाहित होता है। दिनांक 08.07.2024 को बनबसा बैराज से शारदा नदी में 4 लाख क्यूसेक पानी छोड़े जाने के उपरान्त पलिया तहसील के अन्तर्गत अतरिया के पास मैलानी-पलिया रेलमार्ग एवं भीरा-पलिया सड़क मार्ग लगभग 70 मीटर चौड़ाई में कट गया, जिससे पलिया शहर व आस-पास की आबादी पूरी तरह बाढ़ से प्रभावित हो गई। वर्ष 2009 एवं वर्ष 2021 में भी बाढ़ के कारण मैलानी-पलिया रेलमार्ग एवं भीरा-पलिया सड़क मार्ग प्रभावित रहा है। तथा आवागमन भी पूरी तरह से बाधित हो गया। पलिया के आस-पास शारदा नदी के औसत बेड लेवल व औसत ग्राउन्ड लेवल में मात्र 50-60 सेमी० का अन्तर है, फलस्वरूप 70-80 हजार क्यूसेक डिस्चार्ज पर ही नदी का पानी बाहर आकर गाँव एवं पलिया शहर में फैलता है।

### चैनलाइजेशन कार्य

उपरोक्त समस्या का सज्ञान मा० मुख्यमंत्री जी, 30प्र० सरकार द्वारा लिया गया जिसके क्रम में जनपद लखीमपुर-खीरी की तहसील पलिया में शारदा नदी पर निर्मित पलिया रेलवे पुल नं०-97 के अपस्ट्रीम में 05 कि०मी० एवं डाउनस्ट्रीम में 02 कि०मी० में चैनलाइजेशन कार्य का मा० जल शक्ति मंत्री जी द्वारा दिनांक 03.04.2025 को शुभारम्भ किया गया। जोकि वर्तमान में पूर्ण हो चूका है तथा बनाये गये चैनल से पानी की निकासी तीव्र गति से हो रही है।



पहाड़ी क्षेत्रों में हुई भारी वर्षा से दिनांक-28.06.2025 को सायं 4:00 बजे बनबसा बैराज से 115380 क्यूसेक डिस्चार्ज पास हुआ एवं दिनांक-30.06.2025 को दोपहर 2:00 बजे शारदा नदी का जलस्तर पलिया पुल पर 154.650, जोकि खतरे के निशान 154.590 से 6 सेमी० अधिक होने के उपरान्त भी पानी चैनल में ही सुगमतापूर्वक प्रवाहित हो रहा है, जिससे वर्तमान में पलिया में जलभराव की समस्या नहीं है, जबकि विगत वर्षों में शारदा नदी में इसी जलस्तर पर पलिया में बाढ़ की समस्या होने लगती थी। कार्य पूर्ण हो जाने से आस-पास के क्षेत्र के लगभग 40 ग्रामों की 102555 आबादी एवं 19396.947 हे० कृषि योग्य भूमि लाभान्वित होगी।

## Case Study

### महाराजगंज में सीमापार (नेपाल-भारत) बाढ़ पूर्व चेतावनी प्रणाली की स्थापना

श्री संतोष कुमार शर्मा (आई०ए०एस०), जिलाधिकारी  
डॉ प्रशांत कुमार (पी०सी०एस०), अपर जिलाधिकारी(वित्त/राजस्व)  
श्री चंदन कुमार दिवेदी, आपदा विशेषज्ञ

#### संदर्भ

जिले के बाढ़ प्रभावित क्षेत्र चकदहवा, सोहगीवरवा, भोथाह, शिकारपुर में बाढ़ पूर्व चेतावनी तंत्र की प्रभावी व्यवस्था सुनिश्चित करने के उद्देश्य से 4 सदस्यीय flood early warning task force का गठन किया गया है। जिसमें प्रत्येक पंचायत से प्रधान, लेखपाल, रोजगार सेवक तथा आंगनवाडी सेविका के रूप रखा गया। नेपाल देवघाट बेराज से वाल्मीकि बेराज तक पानी आने का समय 7-8 घंटे है जबकि वाल्मीकि बेराज से महाराजगंज के तहसील निचलौल में स्थित सोहगीवरवा, भोतहा तथा शिकारपुर में पानी पहुँचने में 1-2 का समय लगता है अतः जनपद में स्थित उपरोक्त तीनों पंचायत में पानी पहुँचने में कुल समय 8-10 घंटे लगते हैं, जबकि यही सूचना प्रशासनिक तौर पर 12 -15 घंटे में प्राप्त होता है तथा इसी उद्देश्य से समुदाय आधारित बाढ़ अर्ली वार्निंग टास्क फ़ोर्स के माध्यम से बाढ़ सम्बंधित सूचना को पूर्वे में ही प्रेषित कर जान, माल तथा संसाधनों की क्षति होने से बचाया जा सकता है इसी अभिप्राय से तंत्र को सफलतापूर्वक स्थापित किया गया है, और इसकी कार्यप्रणाली के तहत सूचना प्रसार की प्रक्रिया को तेज़ और प्रभावी बनाया गया है।



### सामुदायिक सहभागिता (Community Engagement)

- बाढ़ पूर्व चेतावनी प्रणाली की कार्यकुशलता सुनिश्चित करने हेतु चकदहवा, सोहगीवरवा, भोथाह और शिकारपुर गाँवों में ग्रामीणों के साथ बैठक आयोजित की गई।
- ग्रामीणों को बाढ़ के संभावित खतरों के बारे में जागरूक किया गया। बाढ़ की पूर्व चेतावनी (Early Warning) प्राप्त होने पर तत्काल उठाए जाने वाले कदम बताए गए। Early Warning Task Force के SOP (मानक संचालन प्रक्रिया) की विस्तृत जानकारी साझा की गई, ताकि कोई भ्रम की स्थिति न बने और सभी लोग पूर्व निर्धारित प्रक्रिया के अनुरूप सुरक्षित स्थान पर पहुँचें।
- ग्रामीणों ने अपने प्रश्न पूछे और सुझाव भी दिए, जिन्हें प्रशासन द्वारा संज्ञान में लिया गया। यह भी बताया गया कि नेपाल एवं बैराजों से प्राप्त सूचनाओं के बाद अलर्ट कितनी जल्दी और कैसे गाँव-गाँव पहुँचेगा, इसकी जिम्मेदारी किनके पास रहेगी।



इस सामुदायिक बैठक से ग्रामीणों में विश्वास और सहभागिता को सशक्त किया गया, जिससे बाढ़ आपदा के दौरान अधिक समन्वित कार्रवाई की जा सके।

## किए गए कार्य

- » चकदहवा गाँव को सबसे पहले बाढ़ पूर्व चेतावनी की जानकारी नेपाल के संबंधित प्राधिकरण, वाल्मीकि गंडक बैराज एवं देवघाट बैराज, नेपाल से प्राप्त होती है। नेपाल द्वारा पानी छोड़ने या जलस्तर में तेजी से वृद्धि होने की सूचना तत्काल चकदहवा गाँव की early warning task force को दी जाती है।
- » सूचना मिलते ही चकदहवा की 4 सदस्यीय टीम सक्रिय हो जाती है:
  - 2 सदस्य अपने पंचायत क्षेत्र में रहकर लाउडस्पीकर, मुनादी, सार्वजनिक उद्घोषणा प्रणाली आदि के माध्यम से ग्रामीणों को तुरंत अलर्ट देते हैं।
  - 2 सदस्य पास के अन्य गाँव (सोहगीवरवा) में जाकर वहीं की early warning task force को बाढ़ चेतावनी की सूचना सौंपते हैं।
  - अगले गाँव की टीम भी इसी प्रक्रिया को दोहराती है, ताकि श्रृंखलाबद्ध रूप से सभी गाँवों में चेतावनी तत्काल पहुँच सके।

## सूचना पहुँचाने के साथ ही:

- ग्रामीणों को प्राथमिक राहत शिविर की जानकारी दी गई है।
- सुरक्षित रूट और प्राथमिक चिकित्सा के बारे में बताया गया है।
- जिला कंट्रोल रूम नंबर साझा किया गया है।

## सूचना पहुँचाने के साथ ही:

- चकदहवा में नेपाल एवं बैराज से सूचना प्राप्त होने के बाद 2 सदस्य पड़ोसी सोहगीवरवा पहुँचे — इसमें औसतन 30 मिनट लगे।
- सोहगीवरवा से 2 सदस्य भोथाह गए — इसमें 30-35 मिनट का समय लगा।
- भोथाह से 2 सदस्य शिकारपुर गए — इसमें 35 मिनट लगे।
- हर गाँव की अपनी early warning team सक्रिय होते ही 10-15 मिनट में अपने पंचायत क्षेत्र में अलर्ट जारी कर रही थी।

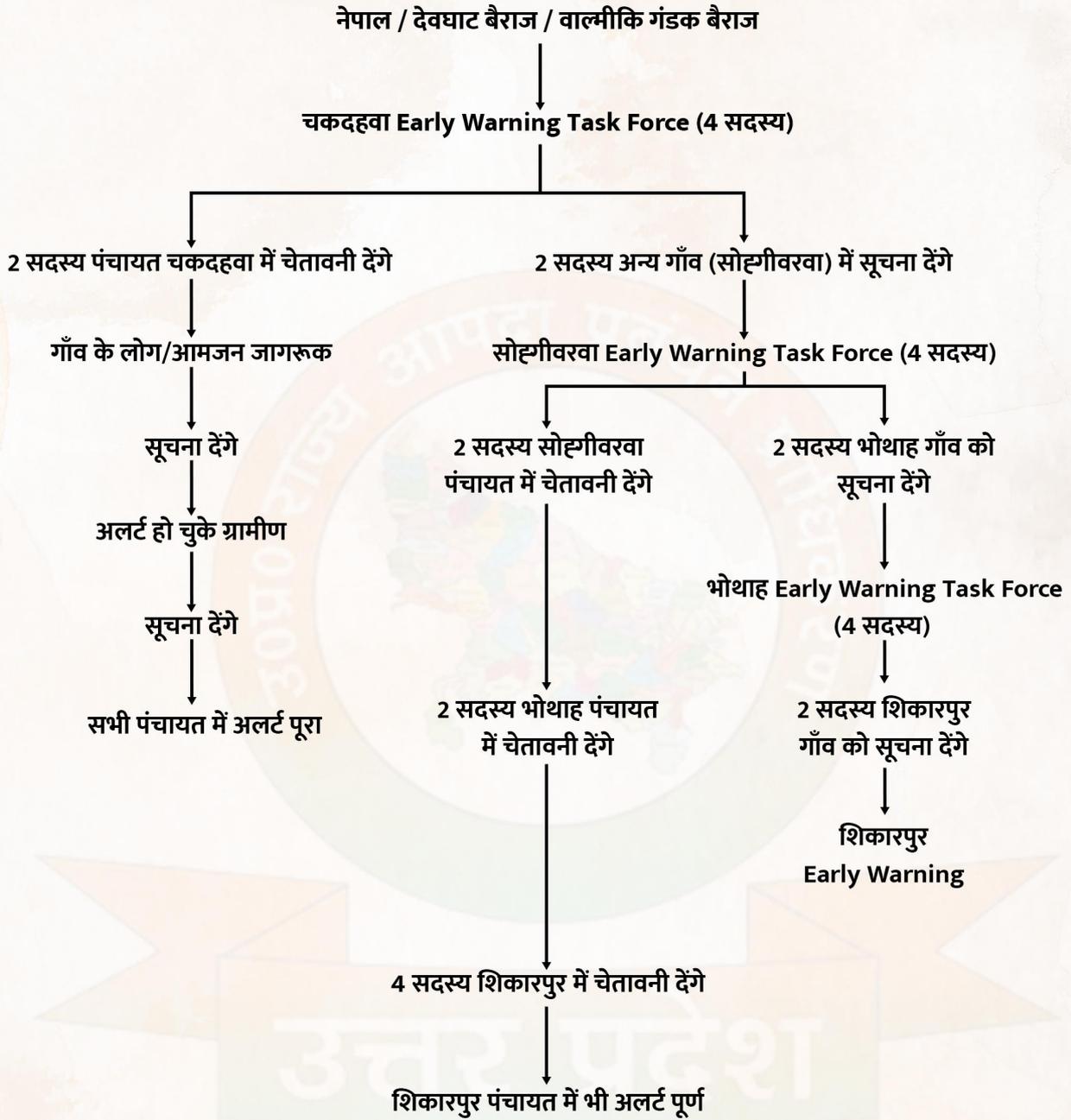
## कुल समय

नेपाल – देवघाट एवं वाल्मीकि बैराजों से चेतावनी मिलने के बाद चकदहवा से प्रारंभ होकर शिकारपुर तक पूरी सूचना श्रृंखला पहुँचने में लगभग 1.5 से 2 घंटे का समय लगा, जिसमें सभी 4 गाँवों में संदेश का पूर्ण प्रसारण भी शामिल है।

## प्रभाव

- नेपाल एवं बैराज स्रोतों से मिली पूर्व सूचना के कारण चेतावनी तेजी से और व्यवस्थित ढंग से पहुँची।
- लोगों को सुरक्षित स्थान पर जाने का पर्याप्त समय मिला।
- अफवाहों और भ्रम की स्थिति को कम करने में मदद मिली।
- पंचायत, SDRF, SSB एवं प्रशासन के बीच समन्वय बेहतर किया गया है।

**SOP FLOW - CHART**



**निष्कर्ष**

चकदहवा, सोह्णीवरवा, भोथाह, शिकारपुर में यह early warning system पूरी तरह सक्रिय, व्यवहारिक और कारगर सिद्ध होने का अनुमान है, जिसको इस वर्ष बाढ़ सत्र में क्रियान्वित कर समझा जायेगा। नेपाल और बैराज स्तर की सूचनाओं के साथ इसे जोड़कर इसकी प्रभावशीलता और भी मजबूत हुई है। भविष्य में यदि मॉडल सफलतापूर्वक कार्य करता है तो इसी मॉडल को अन्य ग्राम पंचायतों में भी लागू किया जा सकता है।

## जनपद शाहजहांपुर बाढ़ से प्रभावित कॉलोनियों में हाई फ्लड लेवल मार्किंग

श्री धर्मेन्द्र प्रताप सिंह (आई०ए०एस०), जिलाधिकारी  
श्री अरविंद कुमार (पी०सी०एस०), अपर जिलाधिकारी(वित्त/राजस्व)  
श्री अभिषेक श्रीवास्तव, आपदा विशेषज्ञ

बाढ़ की पुनरावृत्ति और उसके प्रभावों को ध्यान में रखते हुए प्रशासन द्वारा वर्ष 2024 की बाढ़ में जलमग्न क्षेत्रों का विस्तृत निरीक्षण किया गया। इस निरीक्षण का मुख्य उद्देश्य बाढ़ के दौरान जलमग्न हुए इलाकों की भौगोलिक स्थिति का पुनः आंकलन, निचले स्तर के निर्माणों की पहचान तथा भविष्य में जनहानि और वित्तीय क्षति से बचाव हेतु अग्रिम योजना तैयार करना रहा।

निरीक्षण दल द्वारा प्रभावित क्षेत्रों में हाई फ्लड लेवल मार्किंग (High Flood Level Marking) की कार्रवाई की गई। वर्ष 2024 में आए बाढ़ के अधिकतम जलस्तर को चिन्हित करते हुए दीवारों, बिजली के खंभों और प्रमुख सार्वजनिक स्थलों पर लाल रंग से स्पष्ट निशान लगाए गए।

**इन चिन्हों पर लिखा गया — “वर्ष 2024 में इस बिंदु तक पानी आया था।”**

इस कदम का उद्देश्य स्थानीय नागरिकों को जोखिम के प्रति जागरूक करना है, ताकि भविष्य में वे सावधानी बरतें और जोखिम वाले क्षेत्रों में निर्माण या निवास से बचें।

निरीक्षण के दौरान प्रशासनिक निर्देश भी जारी किए गए। जिलाधिकारी ने स्पष्ट कहा कि यदि भविष्य में बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में अवैध कॉलोनियों या निर्माण कार्य पाए जाते हैं, तो उनके विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

इस संबंध में राजस्व एवं नगर निकाय विभागों को नियमित निगरानी करने के निर्देश दिए गए हैं ताकि बाढ़ जोखिम वाले इलाकों में अनियंत्रित निर्माण को रोका जा सके।

इस पहल से न केवल स्थानीय समुदाय को जोखिम की सटीक जानकारी मिलेगी, बल्कि यह प्रयास बाढ़ प्रबंधन और आपदा जोखिम न्यूनीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा।

### निष्कर्ष-

यह कार्यवाही आपदा जोखिम न्यूनीकरण (Disaster Risk Reduction) के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण पहल है। इससे न केवल जनता को सतर्क किया जा सकेगा बल्कि भविष्य में अवैध निर्माण को भी रोका जा सकेगा।



## बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में कॉलोनियां बनाई गईं तो की जाएगी कार्रवाई

एडीएम वित्त एवं राजस्व ने टीम के साथ किया निरीक्षण, दिए निर्देश

### ड्रैपैक्ट

संवाद भूज एजेन्सी

शाहजहांपुर। वर्ष और खन्ती नदी में बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में भू-सूचना के अग्रिम रूप से कॉलोनियां बनाई गईं। इनके विस्तृत आकलन तैयार करवाया जाएगा। अपर जिलाधिकारी ने अहम संदेश के अंतर्गत प्रशासन के प्रभावित क्षेत्रों में अग्रिम कार्यवाही के लिए निर्देश दिए हैं।

वर्ष और खन्ती नदी के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में अग्रिम रूप से कॉलोनियां बनाई गईं। इनके विस्तृत आकलन तैयार करवाया जाएगा। अपर जिलाधिकारी ने अहम संदेश के अंतर्गत प्रशासन के प्रभावित क्षेत्रों में अग्रिम कार्यवाही के लिए निर्देश दिए हैं।



बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में निरीक्षण लक्ष्मी प्रशासनिक टीम। स्रोत: प्रशासन

अग्रिम कार्यवाही के लिए निर्देश दिए हैं।

अग्रिम कार्यवाही के लिए निर्देश दिए हैं।

अग्रिम कार्यवाही के लिए निर्देश दिए हैं।

## जनपद वाराणसी में एलईडी स्क्रीन के माध्यम से बाढ़ संबंधी जानकारी का प्रसारण

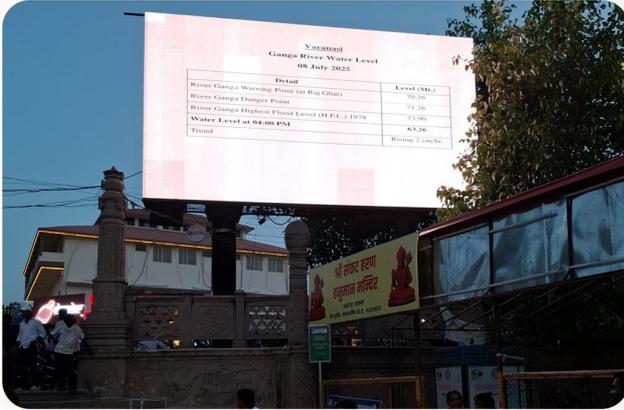
श्री सत्येन्द्र कुमार (आई०ए०एस०), जिलाधिकारी  
 सुश्री वंदिता श्रीवास्तव (आई०ए०एस०), अपर जिलाधिकारी(वित्त/राजस्व)  
 श्री संजीव सिंह, आपदा विशेषज्ञ  
 श्री सुमन राय, प्रोजेक्ट मैनेजर, स्मार्ट सिटी

बाढ़ के दौरान जन-जानकारी और सतर्कता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से जनपद वाराणसी प्रशासन ने एक सराहनीय कदम उठाया है। बाढ़ के प्रति आम नागरिकों को जागरूक करने तथा जलस्तर की सटीक जानकारी प्रदान करने के लिए अब हर दो घंटे में एलईडी स्क्रीन के माध्यम से अद्यतन जानकारी प्रदर्शित की जा रही है।

जनपद के मुख्य घाटों, रेलवे स्टेशन और अन्य प्रमुख सार्वजनिक स्थलों पर कुल छह एलईडी स्क्रीन स्थापित की गई हैं, जिन पर गंगा नदी के जलस्तर का निरंतर प्रसारण (Live Display) किया जा रहा है। इन स्क्रीन पर न केवल जलस्तर की वास्तविक स्थिति दर्शायी जा रही है, बल्कि इसके साथ-साथ “क्या करें, क्या न करें” से संबंधित बाढ़ सुरक्षा संदेश भी प्रसारित किए जा रहे हैं।

### निष्कर्ष-

इस पहल से जनता को जलस्तर की सटीक और समयबद्ध जानकारी मिल रही है, जिससे अनावश्यक अफवाहों और गलत सूचनाओं पर रोक लगाने में भी सहायता मिल रही है। प्रशासन का यह प्रयास बाढ़ प्रबंधन और जनजागरूकता बढ़ाने की दिशा में एक अभिनव और प्रभावी कदम है।



### VARANASI GANGA WATER LEVEL

09 July 2025 at 18:00 PM

Detail	Level (Mt.)
River Ganga Warning Point (at Raj Ghat)	70.26
River Ganga Danger Point	71.26
River Ganga Highest Flood Level (H.F.L.) 1978	73.9
Water Level at 18:00 PM	64.39
Trend	Rising 5.5 cm/hr.

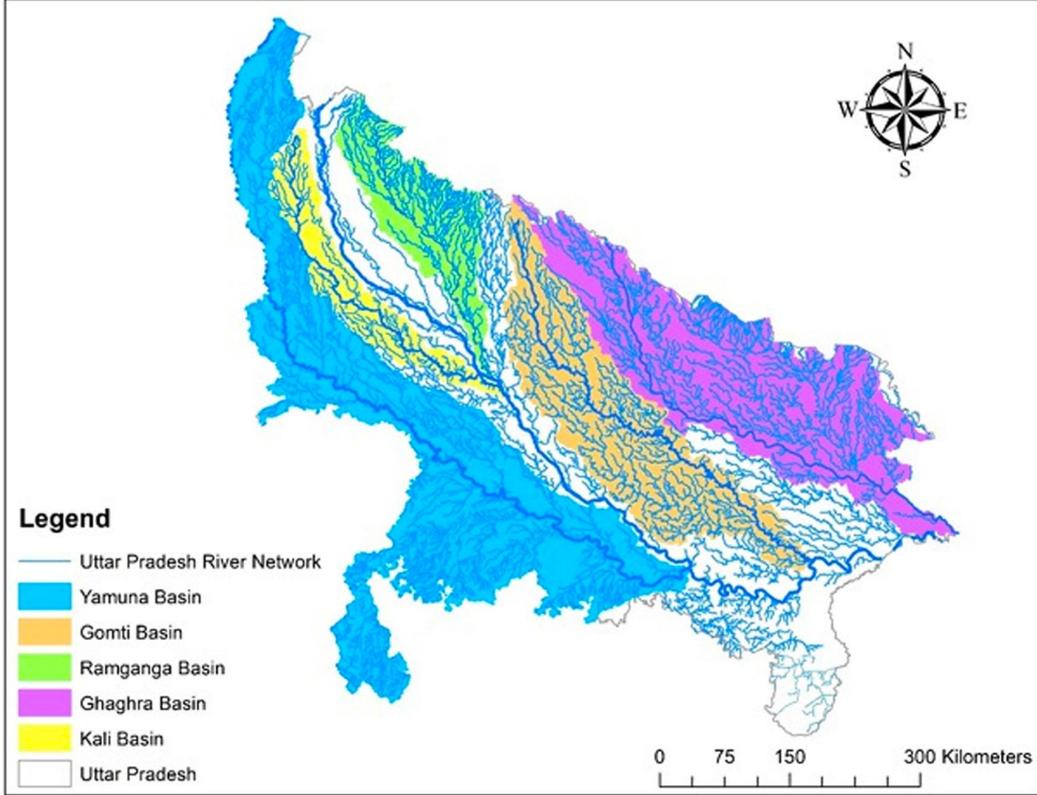
### नोट

- आपदा के अलर्ट/चेतावनी प्रेषण करने में LED स्क्रीन का उपयोग बेहद प्रभावी और उपयोगी साबित होता है क्योंकि LED स्क्रीन के माध्यम से बाढ़, भारी वर्षा, तेज आंधी, हीट वेव जैसे अलर्ट तुरंत दिखाए जा सकते हैं, जिससे लोग समय रहते सतर्क हो जाते हैं।
- भीड़भाड़ वाले स्थानों—जैसे रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड, बाजार, चौराहे, स्कूल और अस्पताल—में LED स्क्रीन बड़ी संख्या में लोगों तक संदेश पहुँचाती हैं और इन पर हिंदी, अंग्रेजी तथा स्थानीय भाषा में अलर्ट प्रदर्शित किए जा सकते हैं, जिससे सूचना सभी वर्गों के लोगों तक आसानी से समझ में आती है।
- आधुनिक LED स्क्रीन आवाज़, आइकन और एनीमेशन के साथ संदेश प्रदर्शित करती हैं, जिससे चेतावनी अधिक आकर्षक और प्रभावशाली बनती है।
- जिला नियंत्रण कक्ष या EOC से रियल-टाइम अपडेट भेजे जाने की सुविधा के कारण स्थिति में बदलाव होते ही नया संदेश तुरंत दिखाया जा सकता है। इसके अलावा प्रशासन राहत शिविर का स्थान, हेल्पलाइन नंबर, आपदा मित्र के संपर्क और ट्रैफिक डायवर्जन जैसी महत्वपूर्ण जानकारी भी दिखा सकता है।
- कई LED स्क्रीन सौर ऊर्जा से भी चलती हैं, जो बिजली कटौती के दौरान बेहद उपयोगी होती है।

# आपदा समाचार

उत्तर प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (UP SDMA)

## UTTAR PRADESH: MAJOR BASINS



### Uttar Pradesh State Disaster Management Authority (UP SDMA)

Address: B-1 Block, PICUP Bhawan, PICUP Building Road, Vibhuti Khand,  
Gomti Nagar, Lucknow, Uttar Pradesh, 226010

✉ [upsdma@gmail.com](mailto:upsdma@gmail.com) ☎ 0522-2306882

For more information, visit our web at [www.upsdma.up.nic.in](http://www.upsdma.up.nic.in)